

पर। वह व्यक्ति तो मर गया, परंतु उसे पता था, कि उद्धार देने वाला यीशु ही है। वो मरा एक भयानक जगह में, लेकिन स्वर्ग में उसका स्वागत है। लेकिन पवित्र शास्त्र के नरक से कोई नहीं बच सकता है। जिसका नये नियम में विस्तारपूर्ण लिखा गया है। आप नरक नहीं देख सकते, वह हमेशा की पीड़ा है।

उदाहरण: (मत्ती ७:१३, ५:२९, १८:८)

मत्ती ७:१३:- सकरे फाटक से प्रवेश करो, क्यों कि विशाल है वह फाटक और चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचता है और बहुत लोग उससे प्रवेश करते हैं।

मत्ती ८:२९ यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे शरीर का केवल एक अंग नष्ट हो, किंतु तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।

मत्ती १८:१८:- यदि तेरा हाथ या तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए, तो काटकर उसको फेंक दे। टुंडा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे अच्छा है कि तू दो हाथ या दो पांव रहते हुए अनंत आग में डाला जाए।

स्वर्ग अनंत काल तक है। और वहाँ परमेश्वर हमें ले जाना चाहता है। तो आप स्वर्ग के लिए आमंत्रित हैं। प्रभू के नाम पर आवाज दो और स्वर्ग में अपनी जगह की टिकट ले लो। एक बार जब मैंने यह बात बोली तो एक औरत मुझसे नाराज हो कर बोली, “हम कैसे स्वर्ग का टिकट ले सकते हैं? मैंने कहा, “अगर नहीं लोगी, तो वहाँ पहुँच नहीं पाओगी। अगर तुम किसी जगह कि टिकट लेती हो कि नहीं।” क्या बोली, “हाँ, लेकिन उसके पैसे भरने पड़ते हैं। मैंने कहाँ, “स्वर्ग कि टिकट के पैसे भी पूरे भरने हैं। लेकिन वह इतनी महँगी है कि कोई उसे खरीद नहीं सकता। हमारे पाप हमें स्वर्ग जाने से रोकते हैं। प्रभू स्वर्ग में हमारा पाप नहीं दे सकते। अगर हमें प्रभु के साथ अनंत काल तक रहना है, तो हमें अपने पापों से बचना है और उनसे उद्धार पाना है। वह सिर्फ ऐसा मनुष्यकर सकता है। जिसमें पाप न हो और वह है यीशु मसीह। सिर्फ वे अकेले आपके पापों के पैसे भर सकते हैं, क्योंकि उन्होंने क्रुस पर अपना लहु बहाया।

तो, हमें क्या करना है, स्वर्ग जाने के लिए? प्रभु हमें आमंत्रण दे रहे हैं। पवित्र शास्त्र में लिखा है: प्रभु हमें आमंत्रण देते हैं:



- लूका १३:२४ यीशुने उससे कहा, “सकरे द्वार से प्रवेश करने का प्रयत्न करो। मैं तुम से कहता हूँ, उस द्वार से बहुत लोग प्रवेश करना चाहेंगे और न कर सकेंगे।
- मत्ती ४:१७ उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरंभ किया, “अपने पापों से मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।”
- मत्ती ७:१३, १४ सकरे फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि विशाल है, वह फाटक और चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है, और बहुत लोग उससे प्रवेश करते हैं। किन्तु छोटा है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है और कुछ लोग ही उसे पाते हैं।

१ तीमुथियुस ६:१२ विश्वास की अच्छी कुशती लड़। तू उस अनंत जीवन को रख ले, जिसके लिए तू बुलाया गया और जिसकी अच्छी साक्षी तू बहुत गवाहों के सामने दि थी। प्रेरितों के काम १६:३१ उन्होंने कहा, “प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।

ये सब हमें उत्साहित और जरूरी प्रभू के आमंत्रण है। क्या आप इस आमंत्रण को स्वीकरना चाहते हैं। यह प्रार्थना बोलिए:

“है, प्रभु यीशु, मैंने पढ़ा कि मैं स्वर्ग सिर्फ आपके द्वारा जा सकता हूँ। मैं आपके साथ स्वर्ग में रहना चाहता हूँ। आप मुझे नरक से बचा लीजिए, जो जगह मेरे पापों कि वजह से

मेरी लिए है रखी है। क्यों कि आप मुझसे इतना प्यार करते हैं, कि क्रुस पर आपने मेरे पापों के लिए अपनी जान दी है, मेरे पाप जो मैंने बचपन से लेकर आज तक किये हैं। आप जानते हैं, वह हर एक गलत विचार और जो चीजें मैं स्वयं भी नहीं जानता। आप मेरा हृदय का जानते हैं। आपके सामने मैं एक खुली किताब के जैसे हूँ। मैं जैसा हूँ, इस लिए मैं क्षमा माँगता हूँ और आप मेरे पापों को क्षमा कर دیجिये। मेरी जिंदगी में आईये और उसे नया बना دیجिये। मेरी मदद करना कि जो कुछ आपकी आँखों में अच्छा नहीं है, उसे त्यागने के लिए, मेरी मदद करना आपका बचन समझने के लिए, और ये समझने के लिए कब आप मुझसे बात कर रहे हैं और आप की आज्ञा का पालन करने के लिए। आज से मेरे प्रभु – परमेश्वर बनिये, मैं आपके पीछे चलना चाहता हूँ। आप मुझे सही रास्ता दिखाना, मेरी जिन्दगी की हर जगह में। धन्यवाद कि आपने मेरी प्रार्थना सुनी है। और मैं परमेश्वर का बेटा हूँ और एक दिन मैं स्वर्ग

में आपके साथ रहूँगा। आमीन।



Title of the original edition: Wie komme ich in den Himmel?
Author's homepage: wernergitt.com

Bruderhand-Medien
Am Hofe 2, 29342 Wienhausen, Germany
E-Mail: info@bruderhand.de
Homepage: bruderhand.de

Nr. 120-56 – Hindi – 1st edition 2024

मैं स्वर्ग कैसे जा सकता हूँ।

मैं आपके साथ रहूँगा। आमीन।

मैं स्वर्ग कैसे जा सकता हूँ।

बहुत लोग अनंत जीवन के बारे में नहीं सोचते हैं। जो मृत्यु के बारे में सोचते हैं, वे नहीं सोचते के उसके बाद क्या होगा और ऐसा सोचने से डरते हैं। बचपन में अमीका/अमेरिका की अभिनेत्री द्रियू बैरी मोर (जन्म १९७५) ने (ऊँ) फिल्म में काम किया था। जब वह २८ साल की थी, उसने कहाँ, “अगर मैं अपनी बिल्ली के पहले मरी तो मेरी राख मेरी बिल्ली को खिलायी जाए ताकि मेरा जीवन उस में दिखे। क्या ये डरावनी बात नहीं है?”

जब यीशु जिन्दा थे, तब बहुत सारे लोग उनके पास आते थे। उनकी समस्याएँ आज कि तरह हैं।

- दस कोढ़ी स्वस्थ होना चाहते थे (लूका १७:१२, १३) तब यीशु को किसी गांव में प्रवेश करते समय दस कोढ़ी मिले। उन्होंने दूर खड़े होकर ऊँचे स्वर में कहा, “हे यीशु, हे स्वामी हम पर दया कीजिए।”
- अन्धे देखना चाहते थे। (मत्ती ९:२७) (यीशु वहाँ से आगे बढ़े तो दो अन्धे उनके पीछे यह पुकारते हुए चले, “हे दाऊद के वंशज, हम पर दया किजिए। मत्ती ९:२७)
- एक मनुष्य ने यीशु से अपने पिता की सम्पत्ति के बंटवारे के झगड़े में सलाह माँगी।
- फरीसियों ने यीशु को फंसाने के लिए यह प्रश्न पूछा कि हमें कैसर को कर देना चाहिए की नहीं (मत्ती २२:१७)

बहुत कम लोग यीशु के पास यह सुनने के लिए आते थे हमें स्वर्ग कैसे जाना चाहिए।

एक धनी अगुआ (शासक) ने यीशु से पूछा, “है उत्तम गुरु, अनंत जीवन का अधिकारी होने के लिए मैं क्या करु?” (लूका १८:१८)

यीशु ने उससे कहा कि वह अपना सब धन बेच कर उनके पीछे चले, क्योंकि वह बड़ा अमीर था, धनवान था, उसने

उनकी बात नहीं सुनी और वह उदास होकर चला गया। उसे स्वर्ग नहीं मिला। लेकिन ऐसे भी लोग थे जो स्वर्ग नहीं ढूँड रहे थे पर जब उन्होंने सुना स्वर्ग के बारे में, जब वे यीशु से मिले, तब उन्होंने स्वर्ग को पाया।

जक्कई यीशु को देखना चाहता था। उसे अपनी चाहत से अधिक मिला। यीशु उसके घर पर गये – और जब वह चाय पी रहे थे (ऐसा आप सोच सकते हैं।) तब उसने स्वर्ग पाया। लूका १९:९ तब यीशु ने उससे कहा, “आज इस घर में उद्धार आया है।”

मैं स्वर्ग को कैसे पा सकता हूँ।

हमने अब तक यह सीखा और देखा है:

- कि स्वर्ग का राज्य आप सही समय में ही पा सकते हैं। इसका मतलब है कि आप जो यह पढ़ रहे हैं, आप भी आज अनंत जीवन पा सकते हैं।
- स्वर्ग का राज्य हम अपने अच्छे कामों से नहीं पा सकते हैं।
- हम बिना किसी तैयारी के, स्वर्ग को पा सकते हैं।

हमारे खुद के विचार, स्वर्ग पाने के गलत हैं वे परमेश्वर ने जो कहा है, उस पर नहीं है।

एक गायिका ने एक जोकर के बारेमें गीत गाया कि वही स्वर्ग जरूर पाएगा क्योंकि उसने बहुत सारे लोगों को खुशी दी है। एक अमीर औरत ने एक घर बनाया जिसमें बीस गरीब औरतें रह सकती हैं मुफ्तमें, परंतु व उसके स्वर्ग में पहुंचने कि प्रार्थना रोज एक घंटा करें। लेकिन हम स्वर्ग कैसे पहुंच सकते हैं?

यीशु ने एक कहानी (दृष्टान्त) बताया है। लूका १४:१६ में लिखा है एक ऐसे मनुष्य के बारे में जिसने बड़ा भोज दिया और बहुत लोगों को बुलाया। लेकिन जो बुलाए गये थे, वे अपने कामों में व्यस्त थे और उन्होंने बहुत बहानों बनाए। एक ने कहा कि मैंने खेत मोल लिया है। दूसरे ने कहा कि उसकी नयी नयी शादी हुई है तो वह नहीं आ सकता है। इस कहानी के अंत में यीशु ने स्पष्ट कहा, “मैं तुमसे कहता हूँ की उन मेहमानों में से कोई भी मेरे भोज को न चखने पाएगा। (लूका १४:१४)

इस कहानी से साफ जाहिर है कि हम या तो स्वर्ग पा सकते हैं या खो सकते हैं। यह जरूरी बात है कि आप स्वर्ग का निमंत्रण ले सकते हैं। या मना कर सकते हैं। यह बहुत आसान दिख रहा है। है ना! लेकिन फिर भी लोग स्वर्ग नहीं जा पाते, इसलिए नहीं क्योंकि वह रास्ता नहीं जानते परंतु इस कारण क्यों कि वह प्रभु का निमंत्रण स्वीकार नहीं करते।

यह ऊपर के तीन मनुष्य हमारे लिए सही उदाहरण नहीं हैं क्योंकि वो प्रभु के निमंत्रण को नकारते हैं। क्या वह भोज किसी ने नहीं खाया। नहीं ऐसा नहीं हुआ। क्योंकि वे आमंत्रित लोगों ने खाना नहीं खाया तो जो मनुष्य था, उसने अपने सेवक को कहा पूरी दुनिया को आमंत्रित करो। ये साधारण बुलावा है कि, “आओ!” और जो कोई आमंत्रण को स्वीकारता है वह उस भोजन को खा सकता है। बहुत सारे लोग आए। फिर उस मनुष्य ने अपने सेवक को कहा, “सड़कों और बाड़ों से भी मनुष्यों को आमंत्रण भेजा क्यों कि और भी जगह है, और मेरा घर भर जाए।”

यहाँ पर, मैं कहना चाहता हूँ कि यह कहानी का आज क्या मतलब है, आज भी स्वर्ग में बहुत जगह है। और परमेश्वर आपसे कह रहे हैं, “आओ और अपना स्थान ले लो स्वर्ग में। अपना चुनाव करो और अनंत जीवन पाओ। आज यह चुनाव किजिए।”

स्वर्ग बहुत खुबसुरत है। इसलिए यीशु एक महाभोज के जैसे बताते हैं। १ कुरिन्थियों २:९, “जो आँख ने नहीं देखा और कान ने नहीं सुना और जो बातों मनुष्य के चित में नहीं चढ़ी, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम करनेवालों के लिए तैयार की है। स्वर्ग जैसा सुंदर स्थान इस धरती पर



नहीं है। स्वर्ग बहुत मुल्यवान है। यीशु, परमेश्वर के पुत्र ने रास्ता बनाया है स्वर्ग के लिए हमारे लिए। उन्होंने हमारे लिए यह आसान मार्ग बनाया है। लेकिन सब से जरूरी बात है कि क्या हमें वहाँ जाने कि, इच्छा है। सिर्फ जो इस कहानी के जैसे मूर्ख लोग हैं, वे नहीं जाना चाहेंगे।

प्रभु यीशु के द्वारा उद्धार

प्रेरितों के काम के २:२१ में हम एक खास वचन को पढ़ते हैं, “और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।” और नये नियम के केन्द्रिय पद है।

जब पौलुस फिलिपी नगर के बन्दीगृह में था, तब उसने दारोगा को कहा, “प्रभु यीशु मसीहा पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।” (प्रेरित के काम १६:३१) यह उद्देश छोटा है परंतु जीवन बदलने वाला। वह दारोगाने उस रात उद्धार पाया।

यीशु तुम्हें किससे बचाता है? यह बहुत जरूरी प्रश्न है, वह हम अनंत काल के नरक से बचाता है। पवित्र शास्त्र कहता है, सब लोग या तो अपना अनंत जीवन स्वर्ग में या नरक में बिताएंगे। एक खुबसुरत जगह है, और दूसरा भयानक। उसके अलावा और कोई चारा/उपाय नहीं है।

पाँच मिनट मरने के बाद, तुम्हारा जीवन का न्याय होगा, यदि आप यीशु को जानते हैं या नहीं और उससे यह निर्णय होगा कि आप कहाँ अपना अनंत जीवन बिताएंगे।

जब मैं पोलन्ड में बोलने गया था, तब हमने पुराना कॉन्सेन्ट्रेट न कैप्लिम्फू में गए थे। वहाँ पर बहुत बुरी चीजें हुई थी, थंड रीछ (दूसरा विश्व युद्ध) १९४२ और १९४४ के बीच में, १.६ मिल्लिन लोगों से ज्यादा लोग, खास कर यहूदी मारे गए और उनी लाशें आग में डाली गई। उस वक्त का लिखा है, (लिम्फू का नरक) वह दृश्य मेरी आँखों के सामने आया कि गैस चेम्बर में ६०० लोग एक साथ मारे जा सकते हैं। को आप उस घटना सोचते हुए डरते हैं, क्या वह नरक था? आज हम वह जगह देख सकते, वहाँ पर कोई मारा नहीं जाता है।

पवित्र शास्त्र में नरक का वर्णन किया गया है। जो अनंत काल तक है। जब हम संग्रालय के प्रवेश द्वार में गये तब मैंने देखा किसीने यीशु का क्रुस का चित्र बनाया है, दिवार